लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 5697

06 अप्रैल, 2022 को उत्तर दिए जाने के लिए

वस्त्र और परिधान क्षेत्र में पूंजी निवेश

5697. श्री के. मुरलीधरन:

क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने जूट की खेती में पैदावार के अंतर को पाटने के लिए विभिन्न प्रौद्योगिकी-केंद्रित दृष्टिकोणों पर ध्यान दिया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या सरकार का एकीकृत विनिर्माण सुविधाओं और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए वस्त्र और परिधान क्षेत्र में पूंजी-निवेश करने का विचार है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) क्या सरकार तकनीकी वस्त्र क्षेत्र में उद्यमिता पाठ्यक्रम शुरू करने और कपड़ा क्षेत्र में क्रांति लाने में सक्षम युवाओं के एक पूल के निर्माण में योगदान देने के लिए आईआईटी और आईआईएम जैसे संस्थानों के साथ भागीदारी करने की योजना बना रही है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

वस्त्र राज्य मंत्री

(श्रीमती दर्शना जरदोश)

(क): सरकार उत्पादकता में वृद्धि करने और फाइबर की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए वर्ष 2014-15 से राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन वाणिज्यिक फसल – जूट (एनएफएसएम-सीसी-जूट) क्रियान्वित कर रही है। इस कार्यक्रम के तहत विभिन्न पहलें अर्थात सीड विलेज कार्यक्रम और सरकारी फार्म के माध्यम से फाउन्डेशन जूट सीड का उत्पादन, प्रमाणित पटसन बीज का उत्पादन, वैकल्पिक रेटिंग प्रौद्योगिकी पर मौके पर प्रदर्शन (एफएलडी), उत्पादन प्रौद्योगिकी/इंटरक्रॉपिंग पर एफएलडी, राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय प्रशिक्षण, प्रमाणित बीज का वितरण, नेलविडर का वितरण, माइक्रोबॉलय कंसोर्टियम (सीआरआईजेएएफ-सोना) का वितरण और स्थानीय पहलें कर रही हैं। इसके अलावा, सरकार फाइबर की गुणवत्ता, उत्पादकता में सुधार करने, जूट उत्पादन की लागत को कम करने और किसानों की आय बढ़ाने के लिए जूट की खेती और रेटिंग की प्रक्रियाओं के वैज्ञानिक तरीकों का एक पैकेज शुरू करने के लिए पटसन-आईसीएआरई (उन्नत खेती और उन्नत रेटिंग प्रक्रिया) को क्रियान्वित कर रही है। इस कार्यक्रम के तहत, कई जागरूकता शिविरों के माध्यम से जूट किसानों को नवीनतम कृषिविज्ञान प्रौद्योगिकी का प्रचार-प्रसार किया जाता है और किसानों को आवश्यक कृषि-स्तरीय प्रशिक्षण दिया जा रहा है। सीड ड्रिल और साइकिल वीडर्स जैसे उन्नत कृषिविज्ञान संबंधी उपकरणों को अपनाने से जूट की खेती में उपज के अंतर को पाटने के साथ-साथ सीआरआईजेएएफ एसओएनओ (जूट और मेस्टा की तेजी से रेटिंग के लिए एक माइक्रोबियल कंसोर्टियम) जैसे रेटिंग एक्सेलेरेटर का उपयोग किया जा रहा है।

(ख): सरकार एकीकृत विनिर्माण सुविधाओं और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित योजनाओं को लागू कर रही है:

i) सरकार ने वर्ष 2027-28 तक सात वर्षों की अवधि के लिए 4,445 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ ग्रीनफील्ड/ब्राउनफील्ड क्षेत्रों में सात **प्रधान मंत्री मेगा एकीकृत वस्त्र क्षेत्र और परिधान** (पीएम मित्र) पार्क स्थापित करने को मंजूरी दी है। ये पार्क वस्त्र उद्योग को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने, बड़े निवेश को आकर्षित करने और रोजगार सृजन को बढ़ावा देने में सक्षम बनाएंगे।

ii) **संशोधित प्रौद्योगिकी उन्नयन निधि योजना (एटीयूएफएस):** वस्त्र क्षेत्र में प्रौद्योगिकी उन्नयन के माध्यम से रोजगार पैदा करने और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए, संशोधित प्रौद्योगिकी उन्नयन निधि योजना (एटीयूएफएस) क्रियान्वित की जा रही है। इस योजना के तहत प्रत्येक पात्र व्यक्तिगत संस्था योजना के अंतर्गत पूंजी निवेश सब्सिडी (सीआईएस) की प्रतिपूर्ति की हकदार है।

iii) **एकीकृत वस्त्र पार्क योजना (एसआईटीपी):** वस्त्र क्षेत्र में निवेश बढ़ाने, रोजगार के अवसर पैदा करने और निर्यात को बढ़ावा देने की दृष्टि से, मंत्रालय देशभर के वस्त्र केंद्रों में विश्व स्तरीय, अत्याधुनिक बुनियादी अवसंरचना के साथ वस्त्र पार्क स्थापित करने के लिए सब्सिडी प्रदान करने हेतु एकीकृत वस्त्र पार्क योजना (एसआईटीपी) क्रियान्वित कर रहा है। योजना का प्राथमिक उद्देश्य उद्यमियों के एक समूह को अपनी वस्त्र इकाइयों की स्थापना के लिए एक क्लस्टर में अत्याधुनिक बुनियादी सुविधाओं की स्थापना के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है, जो अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण और सामाजिक मानकों के अनुरूप हो और इस तरह वस्त्र क्षेत्र में निजी निवेश को जुटाना और रोजगार के नए अवसर पैदा करना है।

(ग): तकनीकी वस्त्र क्षेत्र में कौशल और प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के लिए, राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन के तहत पायलट परियोजना के रूप में संबंधित क्षेत्र में तकनीकी मानव संसाधनों की सुविधा के लिए "बुनियादी संबंधी ढांचा परियोजनाओं में जियो-सिंथेटिक्स के अनुप्रयोगों" में तकनीकी कर्मियों को डिजाइन कमीशनिंग का दो सप्ताह का कौशल प्रशिक्षण शुरू किया गया है। बुनियादी संबंधी ढांचा परियोजनाओं (सड़कों, राजमार्गों, रेलवे, जल संसाधन) में जियो-सिंथेटिक्स के अनुप्रयोग से जुड़े तकनीकी कर्मियों के डिजाइन/कमीशनिंग के कौशल पर पायलट परियोजना (i) भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर, (ii) भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास; और (iii) भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की द्वारा एक साथ संचालित की जा रही है।

*****